Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

मैथिलीशरण गुप्त का काव्य : सांस्कृतिक चेतना

Mamta Rani*

M.A. in Hindi, NET, JRF

शोध आलेख सार :- *संस्कृति किसी भी राष्ट्र या समाज के परंपरागत संस्कारों का वह सम्मुचय है जिससे उसके आचार-विचार, रहन-सहन, रीति रिवाजों, कला, नैतिक, धर्मिक और आध्यात्मिक विश्वासों की अभिव्यक्ति होती है। समाज बनकर बिगड़ते रहते हैं, लेकिन संस्कृति न तो एक युग में बनती है और न ही बिगड़ती है बल्कि इसका -युगों तक उनके उत्थान, पतन, आघात, अवरोधों का इतिहास होता है। मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के सांस्कृतिक चेतना के प्रतिनिधि कवि हैं। वे द्विवेदी युग के कवि माने जाते हैं। राष्ट्रीयता द्विवेदी युग के काव्ज की प्रधान भावना थी। यद्यपि गुप्त जी के 'साकेत' 'यशोधरा' और 'द्वापर' आदि सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ छायावाद युग में प्रकाशित हुए।*

मुख्य शब्द *– संस्कृति, प्रतिनिधि, पुनरुत्थान, श्रद्धांजलि, सांस्कृतिक, स्वावलंबन।*

----------x----------

19वीं शताब्दी में पश्चिम के ज्ञान विज्ञान और समाज दर्शन का जो गहरा प्रभाव भारत पर पड़ा, उसने यहां जिस वैचारिक आंदोलन को जन्म दिया उसको भारतीय पुनरूत्थान के रूप में माना जाता है। उस पुनरूत्थान की चेतना शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में फैलाने में राजा राम मोहन राय, केशवचंद्र सेन, स्वामी दयानंद सरस्वती, और विवेकानंद आदि महापुरुषों का योगदान रहा। उसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में पुनरूत्थान की चेतना फैलाने में बंगाल में रवींद्रनाथ टैगोर ने योगदान दिया। इसी तरह हिंदी प्रदेश में उस चेतना को अपनी अभिव्यक्ति देने में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपना योगदान दिया।

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार :-

'पुनरूत्थान ने हमारी सारी संस्कृति, संपूर्ण इतिहास और समग्र विश्वास पर जो नया आलोक फैंका, उसकी अधिक से अधिक अभिव्यक्ति, सबसे प्रथम, श्री मैथिलीशरण गुप्त जी की कविताओं में ही हुई। इसलिए हिंदी पुनरूत्थान के कवि वे ही माने जाएंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे बंगला में पुनरूत्थान के कवि रवींद्रनाथ ठाकुर हुए हैं।' (1)

गुप्त जी की बाल्यावस्था पर उनके माता-पिता के संस्कारों का विशेष प्रभाव पड़ा। उनके हृदय पर अपने परिवार के धार्मिक वातावरण के प्रभाव के फलस्वरूप ही राम भक्ति के संस्कारों का उदय हुआ। 'साकेत' के 'समर्पण' अंश में अपने पिता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गुप्त जी ने कहा है:- 'मैं तुम्हारा कथन भूला नहीं हूं कि जहां राम रहते हैं वहीं अर्थात उन्हीं काव्य प्रसंगों में कवि कल्पना की सफलता है।', इसी प्रकार 'प्रदक्षिणा' काव्य में अपनी जननी काशीबाई को श्रद्धांजलि अर्पित करते उन्होंने स्मरण किया है कि उनकी माता रामचरित को छोड़कर और कुछ नहीं पढ़ती थी। माता और पिता से समान रूप से प्राप्त रामभक्ति का यह संस्कार गुप्त जी की चेतना से सदा हमेशा जुड़ा रहा और वैष्णव भावना के साथ संपूर्ण काव्य का आधार बना। उन्होंने प्राय: सभी ग्रंथों का आरंभ मंगलाचरण रूप में राम या सीता के स्मरण के साथ किया है। अपनी रामभक्ति-भावना को खुलकर अभिव्यक्ति देने का अवसर गुप्त जी को साकेत में प्राप्त हुआ।

गुप्त जी की सांस्कृतिक चेतना में भक्ति के समान ही धर्म का भी बहुत ऊंचा स्थान है। अपने संकुचित अर्थ में धर्म का अर्थ-अपने ही सम्प्रदाय विशेष की उपासना करना और उसके आचार-विचार आदि से संबंधित होता है, लेकिन गुप्त जी ने धर्म को हर जगह पर व्यापक रूप में ग्रहण किया, वे मनुष्य को पशु से भिन्नता करने वाला तत्व धर्म को मानते हैं। इस प्रकार वे संस्कृति का समानार्थी ही है क्योंकि संस्कृति का चरम उद्देश्य मनुष्य को पशुधर्म से ऊंचा उठाकर मानव धर्म की पूर्णता प्राप्त कराना है। उनकी दृष्टि में अच्छे और सुंदर कर्म करना ही मानव धर्म है।

www.ignited.in

भारत के पुनरूत्थान के वैचारिक आंदोलन का एक पहलू नारी गौरव के रूप में प्रकट हुआ। काव्य में उपेक्षित नारियों के संबंध में रवींद्रनाथ ठाकुर के लेख के द्वारा तथा बाद में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के लेख द्वारा साहित्य जगत का जो ध्यान आकृष्ट किया गया उसकी प्रेरणा ने भी गुप्त जी की लेखनी से नारी गौरव का गान करवाया। शताब्दियों से उपेक्षित और पीड़ित नारी को घर और समाज से उसका सम्मानजनक पद प्राप्त हो, देश के विकास में उनका समान योगदान हो और नारियों से संबंधित कुत्सित रूढ़ियों, रीतियों की समाप्ति की आवश्यकता महसूस हुई। गुप्त जी के वैष्णव हृदय में नारी के संबंध में – 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।' मनु की इस उक्ति का भाव सहज ही रहा होगा। उनकी रचनाओं में नारी भावना का विशद चित्रण हुआ है। 'साकेत' महाकाव्य में उर्मिला का मातृत्व भाव की प्रबलता से युक्त कैकेयी का द्वापर काव्य में विधृता का, यशोधरा खंड काव्य में महात्मा बुद्ध की पत्नी यशोधरा का, 'विष्णुप्रिया' में विष्णुप्रिया का चित्रण बड़े मनोयोग से किया है। गुप्त जी की दृष्टि में नारी व्यक्तित्व के दो पक्षों का स्पष्ट रूप में लक्ष्य किया है। पहला पक्ष है नारी का पत्नीत्व एवं मातृत्व, दूसरा पक्ष है नारी की स्वतंत्र सत्ता और महता। ये दोनों पक्ष नारी के जीवन में परस्पर सहायक बनें, गुप्त जी के साहित्य में यही स्थिति दिखाई पड़ती है।

गुप्त जी की सांस्कृतिक चेतना वैदिक अथवा आर्य मान्यताओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वैदिक साहित्य के बाद विकसित स्मृतियों और पुराणों के विशाल साहित्य को भी, जिसमें रामायण और महाभारत भी सम्मिलित करके चली है। गुप्त जी की चेतना को 'आर्य हिन्दू' चेतना कहा जा सकता है। गुप्त जी के अनुसार

"विख्यात हिन्दू धर्म ही सच्चा सनातन धर्म है।

वह धर्म ही धारण क्रिया का नित्य करता कर्म है।"

भारत भारती पृष्ठ – 133

गुप्तजी के चालीस से अधिक काव्यों में से लगभग दस के कथानक तो पुराणों पर आधारित हैं ही अन्य अनेक काव्यों में भी स्थान-स्थान पर पौराणिक संदर्भ प्रस्तुत करते चलते हैं। परलोकवाद, कर्मफलवाद, जन्मान्तरवाद में निहित विश्वासों का आधार पौराणिक साहित्य ही है। गुप्तजी की सांस्कृतिक चेतना इन विश्वासों को ग्रहण करके चली है।

मैथिलीशरण गुप्त भारत के पुनरूत्थान की विचारधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति गुप्त जी की अनेक रचनाओं में हुई हैं। स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करते हुए महात्मा गांधी जी ने अहिंसा, सत्याग्रह, अछूतों का उद्धार विभिन्न आयामों को अपनाया। गुप्त जी स्वतंत्रता आंदोलन एवं गांधीवाद के भी प्रतिनिधि कवि हैं। राष्ट्रप्रेम और जातीय स्वतंत्रता की रक्षा के भाव गुप्त जी की सांस्कृतिक चेतना के अंग है।

उनकी कृति 'भारत भारती' में भारत के अतीत गौरव के साथ-साथ वर्तमान दुर्दशा की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है और परतंत्रता की बेड़ियां तोड़ने का आह्वान किया गया है। इन्हीं कारणों से इस कृति को तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। 'स्वदेश संगीत' में भी उन्होंने परतंत्रता की निंदा करते हुए भारत की सुप्त चेतना को जगाने का प्रयास किया है। 'अनघ' नाटक में सत्याग्रह की प्रेरणा देते हुए राष्ट्र सेवा और आत्मोत्सर्ग की भावनाओं का निरूपण किया है तथा 'साकेत' में स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया है। मैथिलीशरण गुप्त जी को भारत-भारती के आधार पर गांधी जी ने 'राष्ट्रकवि' की उपाधि प्रदान की थी।

पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में -

'तब से (भारत-भारती के प्रकाशन के समय में) गुप्त जी को लोकचित्त में राष्ट्र प्रीति की भावना जगाने वाले सबसे शक्तिशाली कवि के रूप में हिन्दी-जगत देखता आया है। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्र कवि हैं।' (2)

गुप्त जी की सांस्कृतिक चेतना पर मानववादी विचारधारा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। गुप्त जी ने अपनी आस्तिकता को बनाए रखकर अपने काव्यों के अनेक प्रसंगों के माध्यम से मानववादी निष्ठा व्यक्त की है। अपनी उन्नति की अवस्था में मनुष्य अपने अच्छे कर्मों के द्वारा देव बन जाता है और अपनी अवनति की अवस्था में बुरे कर्मों के द्वारा वही राक्षस, दैत्य बन जाता है। मानवता ही सबसे बड़ी साधना है। गुप्त जी पर गांधी जी का, जैन धर्म का गहरा प्रभाव रहा है। इन्होंने अपने काव्यों में सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा तथा उपवास आदि तत्वों का यत्र-तत्र समावेश किया है।

गुप्त जी की सांस्कृतिक चेतना में राज्य व्यवस्था के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था का आदर्श मुख्य रहा है। गुप्त जी द्वारा काव्यों में राजा की स्थिति मात्र एक लोकसेवक की है। राज्य राजा की निजी संपति नहीं है, वह उन लोगों की सुख शांति के लिए राज्य का संचालन करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले के युग में, हमारे देश के स्वतंत्र होने के बाद की राज्य व्यवस्था की पूर्व कल्पना गुप्त जी ने 'साकेत', 'प्रदक्षिणा'

और 'सिद्ध राज' आदि काव्यों में की है। उनकी प्रेरणा से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में प्रजातंत्र की स्थापना हुई।

गुप्त जी वैष्णव भावना से प्रेरित थे इसलिए गृहस्थ जीवन का सुखी समृद्ध रूप एवं पारिवारिक सौहार्द उनकी सांस्कृतिक चेतना के अंग हैं। गुप्त जी को राष्ट्र कवि की उपाधि से सम्मानित किया गया। निश्चय ही राष्ट्रीय भावना का उज्ज्वल रूप उनके काव्यों में सशक्त रूप से अभिव्यक्त भी हुआ है। किन्तु राष्ट्र की सुख सम्पन्नता और शांतिमयता का मूल आधार परिवार ही है। परिवार की पाठशाला में ही राष्ट्र के नागरिक उन मूल्यों का विकास करते हैं जिन पर राष्ट्र का बहु पक्षीय विकास निर्भर करता है। परिवार के संस्कार ही राष्ट्र के संस्कार बनते हैं।

डॉ. नगेंद्र के शब्दों में –

'जिसने गुप्त जी के काव्यों का एक बार भी अध्ययन किया है, वह अवश्य मान लेगा कि उनको गृहस्थ जीवन के चित्र खींचने में अद्वितीय सफलता

मिली है। यह युग राष्ट्रीयता का होने के कारण, लोग उनकी राष्ट्रीयता को ले उड़े, अन्यथा उनकी प्रधान विशेषता, गृहस्थ जीवन के सुख-दुख की व्यंजना ही है।' (3)

परिवार के सदस्यों में पारस्परिक स्नेह, आदर, सौहार्द और त्याग का वातावरण चित्रित करने का जहां भी इनको अवसर अपने काव्यों में प्राप्त हुआ, वे अत्यंत हृदयग्राही और भावपरक चित्रण करने से नहीं चुके हैं। 'साकेत' में ऐसे चित्रो की भरमार है तथा 'पंचवटी' 'जयभारत' 'अनघ' 'सिद्धराज', 'यशोधरा' आदि काव्यों के भी ऐसे अनके गृहस्थ चित्र इन्होंने प्रस्तुत किए हैं।

गुप्त जी के अधिकतर काव्य उस समय में रचे गए जिसमें संसार ने दो विश्व युद्धों की विभीषिका देखी। उन युद्धों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव संसार के अधिकांश देखों पर पड़ा। गुप्त जी ने युद्धों के कारणों और परिणामों से गहरी संवेदना ग्रहण की। उन्होंने दोनों विश्व युद्धों के संदर्भ को लेकर 'विश्ववेदना' काव्य की रचना की। इसके अतिरिक्त 'जयभारत' काव्य का आधार भी युद्ध ही है। विज्ञान जो मानवीय सभ्यता और संस्कृति की उन्नति का साधन हो सकता था किन्तु उसका घातक रूप बना हुआ है। युद्ध की समस्या का समाधान गुप्त जी इसी में देखते हैं कि मनुष्य अपना मिथ्या दर्प छोड़कर देश, कुल जाति अथवा वर्ग पर आधारित भेदभाव का विसर्जन कर दें, जिससे कि विश्वमानव की भावना का उदय हो। भविष्य की युद्ध रहित उज्ज्वल मानव संस्कृति के संबंध में गुप्त जी ने कहा है-

"एक दिन छूटेगा यह ग्रास, शुद्ध होगा निजी स्वर्ग-विकास

धन्य होंगे तब हम ऐसे, कभी पहले न हुए जैसे।।"

पृष्ठ-52

सांस्कृतिक विचारों और आदर्शों का उद्घोष करने वाले साहित्य की हमारे भारत में कमी नहीं है, किन्तु सांस्कृतिक भावादर्शों की हृदय को उद्वेलित करने वाली अमूर्त छवियां प्रस्तुत करने का जो कार्य गुप्त जी के काव्य के द्वारा हुआ है वह अन्यत्र दुर्लभ है। लोकप्रियता की दृष्टि से हिन्दी कवियों में तुलसीदास के बाद सार्वदेशिक मान्यता पाने वाला काव्य यदि किसी का है तो वह श्री मैथिलीशरण गुप्त का है। गुप्त जी ने बोलचाल की ठेठ खड़ी बोली को ठीक उसी प्रकार का संस्कार प्रदान करके उसकी शक्ति को बढाया जिस प्रकार का संस्कार ठेठ अवधी को तुलसीदास ने अपने रामचरित मानस की अभिव्यक्ति के लिए किया था।

संदर्भ –

1. दिनकर, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन ग्रंथ, पृष्ठ 973
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य, पृष्ठ 422
3. डॉ. नगेंद्र, साकेत एक अध्ययन, पृष्ठ 15

Corresponding Author

Mamta Rani*

M.A. in Hindi, NET, JRF

mamta391arora@gmail.com